उन्नयन शिक्षा विभाग

छत्तीसगढ़ युवा विकास संगठन शिक्षण समिति द्वारा संचालित

विप्र कला, वाणिज्य एवं शारीरिक शिक्षा महाविद्यालय

पं. रविशंकर शुक्ल वि.वि. के पीछे, रायपुर (छ.ग.)

पंजीयन क्र. 17951 | E-mail : vipracollege1996@gmail.com, Website : www.vipracollege.org | पंजीयन क्र. 17951

वर्ष-5 • संयुक्तांक 8-9 • अर्द्धवार्षिक बुलेटिन • जनवरी 2017

अध्यक्षीय

अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि शिक्षा विभाग द्वारा उन्नयन 2017 का संयुक्तांक 8 व 9 का प्रकाशन किया जा रहा है। यह प्रशिक्षण एवं शिक्षण के स्वरुप को प्रभावी व रुचिकर बनाने में सहायक होगा, जिससे प्रशिक्षार्थियों में सृजनात्मक एवं साहित्यिक प्रतिभाओं को मार्गदर्शन प्राप्त होगा। उन्नयन के प्रकाशन के लिये मेरी शुभकामनाएँ...

ज्ञानेश शर्मा, अध्यक्ष विप्र शिक्षण समिति, रायपुर (छ.ग.)
मीडिया प्रभारी, छ.ग. प्रदेश कांग्रेस कमेटी

संपादकीय ...

शैक्षिक संभावनाओं को सहेजकर समाज हितार्थ मार्गान्तरण स्वस्थ परंपरा है। प्रतिभाओं को पहचानकर उन्हें समुचित अवसर प्रदान करना हमारा दायित्व है। इस बुलेटिन को प्रकाशित करने का उद्देश्य छात्र-छात्राओं को नवाचार से परिचित कराकर उनके व्यवहार में परिवर्तन लाना। वस्तुत: यही परिवर्तन सीखना है। इसकी दो विशेषताएं हैं सार्वभौमिकता और निरन्तरता। सीखने की प्रक्रिया प्रत्येक स्थान पर और प्रत्येक समय चलती रहती है। इसी कारण मनुष्य जन्म से लेकर मृत्यु तक कुछ न कुछ सीखता रहता है, जिसके परिणाम स्वरुप व्यक्ति के व्यवहार में परिवर्तन आता रहता है। मुझे विश्वास है कि इस बुलेटिन का यह संयुक्तांक शिक्षा जगत को, समुन्नत करने में सहायक होगा यह अंक शिक्षा के विभिन्न पक्षों के चिंतन एवं मनन का प्रयास मात्र है। आपके अमूल्य सुझाव हमारे उन्नयन के प्रकाशन को सिद्ध होंगे। आप सभी के सहयोग, स्नेह एवं आशीर्वादार्थ उन्नयन आपके प्रस्तुत है।

डॉ. शांतिबाला [illegible]
विभागाध्यक्ष (शिक्षा)

संपादक मंडल

डॉ. दिव्या शर्मा, श्रीमती रसिका मालवीय, श्रीमती सुमन पाण्डेय,
श्रीमती रीना शुक्ला, श्रीमती सारिका त्रिवेदी

आत्मविश्वास और कड़ी मेहनत,
असफलता नामक बीमारी को
मारने के लिए सबसे बढ़िया दवाई है।
ये आपको एक सफल व्यक्ति बनाती है।

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

प्राचार्य की कलम से ...

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है शिक्षा विभाग द्वारा उन्नयन का संयुक्तांक का प्रकाशन किया जा रहा है। इस बुलेटिन से विद्यार्थियों की विभिन्न गतिविधियों की जानकारी प्राप्त होगी। मुझे विश्वास है कि यह शिक्षकों एवं छात्र-छात्राओं के लिए सशक्तिकरण एवं प्रेरणा का माध्यम बन सकेगा। इसके प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएँ।

डॉ. मेघेश तिवारी, प्राचार्य

शैक्षणिक भ्रमण

दिनांक 04/02/2017 को बी.एड. प्रशिक्षार्थियों को शैक्षणिक भ्रमण हेतु सिरपुर ले जाया गया। सिरपुर छत्तीसगढ़ में महानदी तट पर स्थित एक पुरातात्विक स्थल है। इसका प्राचीन नाम श्रीपुर है। यह एक विशाल नगर हुआ करता था तथा यह दक्षिण कोसल की राजधानी थी। सोमवंशी नरेशों ने यहाँ पर राम मंदिर और लक्ष्मण मंदिर का निर्माण करवाया था। ईटों से बना हुआ प्राचीन लक्ष्मण मंदिर आज भी यहाँ का दर्शनीय स्थान है। उत्खनन में यहाँ पर प्राचीन बौद्ध मठ भी पाये गये हैं।

सिरपुर में धातुमूर्तियों का निर्माण होता था। उत्खनन में अब तक 80 [illegible], निर्माण के लिए आवश्यक सामग्री के साथ एक बौद्ध विहार से [illegible] है। राज्य शासन एवं भारतीय पुरातत्वीय सर्वेक्षण सिरपुर के [illegible] महत्व को अधिकाधिक उजागर करने, अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन स्थल [illegible] विकसित करने तथा उपलब्ध सांस्कृतिक निधि का विश्व धरोहर के रुप में स्थापित करने की दिशा में सतत् प्रयासरत हैं।

रंग तरंग

वार्षिकोत्सव में छात्र-छात्राओं की आकर्षक प्रस्तुति दिनांक 16/01/2017

महाविद्यालय में वार्षिक स्नेह सम्मेलन में छात्र-छात्राओं ने बड़े उत्साह के साथ सांस्कृतिक कार्यक्रमों की आकर्षक प्रस्तुति दी। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि आदरणीय ज्ञानेश शर्मा जी, अध्यक्ष विप्र शिक्षण समिति रायपुर एवं अध्यक्षता आदरणीय आकाश शर्मा जी, प्रदेश अध्यक्ष एन.एस.यू.आई. थे। उन्होंने कहा यह कार्यक्रम छात्र-छात्राओं की विभिन्न प्रतिभाओं को विकसित करने का सराहनीय प्रयास है। उन्होंने विद्यार्थियों को प्रेरित करते हुए कहा कि अनुशासन, परिश्रम और समर्पण इन तीनों को आत्मसात करके हम सफलता की नई ऊँचाइयों को प्राप्त कर सकते है। प्राचार्य डॉ. मेघेश तिवारी जी ने महाविद्यालय प्रतिवेदन प्रस्तुत किया।

Scanned by TapScanner

शपथ ग्रहण समारोह

चित्रकला प्रतियोगिता

अतिथि व्याख्यान - प्रो. कुसुम साहू

अतिथि व्याख्यान - डॉ.वर्णिका शर्मा

स्वास्थ्य परीक्षण शिविर

मनोरंजक स्पर्धाएं

चम्मच दौड़, डक वॉक 13/01/2017
स्लो साइकिल रेस एवं मुर्गा दौड़ 13/01/2017
कुर्सी दौड़ एवं रस्साखींच 14/01/2017
मेहंदी प्रतियोगिता

कैशलेस व्यवस्था एवं डिजिटल इंडिया

इसकी आवश्यकता पर एक दिवसीय सेमीनार का आयोजन दिनांक 17/02/2017, मुख्य वक्ता प्रो. अभय राठौर सहा. प्राध्यापक चिरमिरी।

मुख्य बिंदु

- कैशलेस व्यवस्था को समझना।
- कैशलेस व्यवस्था व डिजिटल भुगतान वैश्वीकरण की महती आवश्यकता क्यों है?
- ऑनलाईन भुगतान प्रक्रिया-इंटरनेट बैंकिंग, मोबाईल बैंकिंग एवं मोबाईल वॉलेट।
- पारदर्शिता के लिए कैशलेस भुगतान की आवश्यकता क्यों जरुरी है?

एकेडमिक डेवलपमेंट प्रोग्राम

दस दिवसीय यह कार्यक्रम 24/10/2017 से शोध प्रकोष्ठ द्वारा प्रारंभ किया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कुलपति डॉ. शिवकुमार पाण्डेय पं.रवि.वि.वि. रायपुर द्वारा प्राध्यापकों के उन्नयन हेतु विभिन्न विषयों पर प्रकाश डाला गया। परिणामतः श्रोतागण में यह सोच विकसित हो सकें की कक्षा प्रबंधन एवं समय प्रबंधन कैसे किया जाये एवं विद्यार्थी विकास में एवं उच्च कोटि की सफलता प्राप्त करने हेतु शि[illegible] का निर्वहन कैसे करना होगा उनके व्यवहार तथा अभिवृत्ति[illegible] के लिए उन तत्वों का निर्धारण करना होगा जिससे शिक्षण [illegible] आ सकें। निश्चित रुप से यह कार्यक्रम शिक्षकों के अकादमिक [illegible] सराहनीय कदम है।

विभिन्न प्रकोष्ठ की गतिविधियाँ
बालिका समस्या निवारण प्रकोष्ठ
विषय : महिला प्रताड़ना एवं महिला सुरक्षा
रंगोली एवं चित्रकला प्रतियोगिता
निर्देशन एवं परामर्श प्रकोष्ठ : व्याख्यान
डॉ. वर्णिका शर्मा, सहा. प्राध्यापक विज्ञान महाविद्यालय
एन्टी रैगिंग प्रकोष्ठ : व्याख्यान डॉ. गिरीशकांत पाण्डेय, प्राध्यापक विज्ञान महाविद्यालय
शोध प्रकोष्ठ : दो दिवसीय राज्य स्तरीय सेमीनार
दस दिवसीय सेमीनार : एकेडेमिक डेवलपमेंट प्रोग्राम

एलुमनी मीट

भूतपूर्व छात्र सम्मेलन में एलुमनी द्वारा लिए गये निर्णय :-

- जीवन में कुछ न कुछ सीखना।
- महाविद्यालय का हिस्सा बने रहने का संकल्प लिया।
- आजीवन विद्यार्थी बने रहें।
- महाविद्यालय के हित में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करना।
- अध्ययनरत छात्र-छात्राओं के हित के लिए विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन करना।

राज्य स्तरीय सेमीनार

अधिगम स्तर मापने में शिक्षक की भूमिका

Role of Teacher in Assessing Learning

शिक्षक की सीखने सिखाने की प्रक्रिया में एक अहम् भूमिका होती है। द्वि दिवसीय सेमीनार 28/06/2017 और 29/06/2017 को महाविद्यालय में संपन्न हुआ, मुख्य वक्ता डॉ. प्रियंवदा, डॉ. मीता झा, डॉ. बशीर हसन एवं डॉ. मुकेश चन्द्राकर थे। विचार गोष्ठी में इस प्रकार शिक्षक की भूमिका के प्रमुख चार घटक बताए गये :-

1. प्राथमिक कार्य : शिक्षक विद्यार्थियों के साथ समानता एवं पक्षपातहीन व्यवहार करें।
2. [illegible]शेष कार्य : शिक्षक को अपना कार्य पूर्ण, तैयारी, लगन सजगता एवं [illegible]क्षता के साथ करना।
3. [illegible]सायिक कार्य : शिक्षक को अपने व्यवसाय में निष्ठा होनी चाहिए, [illegible]पने व्यवसाय की आचार संहिता का पालन करना अनिवार्य है।
4. [illegible]वारिक कार्य : शिक्षक को विभिन्न परिस्थितियों में अन्य प्रकार के कार्य जैसे परामर्शदाता, समाज सुधारक, जनसंपर्क कार्यकर्त्ता की भूमिका का निर्वहन करना।

वस्तुतः शिक्षक का कार्य विद्यार्थियों को स्वयं के प्रयास से सीखने तथा बदलती परिस्थितियों में नवाचार का प्रयोग करना सिखाना है। इसके लिए शिक्षक को भी नवाचारी तथा संगठन कर्त्ता और परिवर्तन के अभिकर्त्ता के रोल में दक्ष होने की आवश्यकता है। आज के युग में शिक्षकों की अभिव्यक्ति इतनी प्रभावपूर्ण हो कि स्वयं सीखने के प्रति प्रोत्साहित हो।

शिक्षको को अपने शिक्षण कार्य को सफल बनाने एवं विद्यार्थियों के सीखने को संगठित करने पर पहले की अपेक्षा अधिक बल देना होगा और उन्हें आधुनिक शैक्षिक तकनीकी का अधिक विस्तृत उपयोग करके शिक्षण की गुणवत्ता को बढ़ाना होगा। परिणामतः उनके विद्यार्थियों प्रतिस्पर्द्धा में सफलता प्राप्त करते हुए देश के विकास में सहयोग प्रदान कर सकेंगे।

आनंद मेला का शुभारंभ

आनंद मेला

सर्वश्रेष्ठ शिक्षक सम्मान

गणतंत्र दिवस

मेंहदी प्रतियोगिता

Scanned by TapScanner